International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1334-1337

मराठी एवं मालवी लोकपर्व संबंधी लोककथाओं का अध्ययन

डॉ० प्रिया गंगापुरकर
हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश भारत।

प्रस्तावना

साहित्य को भारतीय संस्कृति और परम्परा में देवी विधान का प्रतिफल माना गया है। पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही कई प्राकृतिक विपदाओं का सामना करना पड़ा, परिणामस्वरूप वह कहीं पर तो विजयी रहा और कहीं पर प्रकृति की शरण में जाकर उसी में अपने अस्तित्व की तलाश करने लगा। यहीं से उसकी सभ्यता का विकास प्रारम्भ हुआ वही सभ्यता अपने बढ़ते हुए क्रम में 'लोक–विश्वास' का आधार पाकर जन–सामूहिक भावना से संस्कृति व साहित्य के रूप में परिवर्तित होती गई।

भारत की संस्कृति का विहंगावलोकन करने पर दृष्टि उसके एक पक्ष पर ठहर जाती है, जो अपने आप में बड़ी विशाल एवं उदात्त गुणों से परिपूर्ण है, वे है हमारे भारत के 'लोकपर्व'।

इन लोकपर्व में प्रांत परिवर्तन के कारण कई भिन्नता पाई जाती है। मनुष्य समाज में रहता है इसलिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति के साथ उसका विशेष संबंध होता है साथ ही उसका मनोरंजन भी होता है भिन्न–भिन्न प्रांतों व स्थानों के कारण ही पर्व, के विधि–विधान व कथाओं में काफी समानताएँ व असमानताएँ हमें दृष्टिगत होती है। पर्वों से जुड़ी कथा व कहानियाँ 'लोककथाएँ' कहलाती हैं। चाहे कोई भी प्रांत हो यहाँ के पर्व लोककथाओं के बिना पूर्ण नहीं होते है। इनका जन्म और अस्तित्व दोनों प्रयोजन परम्परा, धर्म व श्रद्धा से जुड़ा होता है। इन कथाओं के विशाल विश्व है और इस विश्व में साहित्य रूपी कितने ही राष्ट्र, प्रांत, नगर, उपनगर विराजित है।

जब बात प्रांतों की हो रही हो तो महाराष्ट्र प्रांत यानि 'महान–राष्ट्र'। महाराष्ट्र को 'पाली भाषा' के महावंश ग्रंथ में अपरान्तक, महारढ़ढ, व सुवनभूमि भी कहा गया है। आज का महाराष्ट्र पहले 'दक्षिणापथ' के नाम से भी जाना जाता था। मराठी भाषा महाराष्ट्र की भाषा है। मराठी का विस्तार अपनी बोलियों सहित प्रायः सम्पूर्ण भारतीय प्रायद्वीप में है, यह लगभग एक करोड़ नब्बे लाख मनुष्यों की भाषा है।

इसी तरह मालवा का नाम आते ही मस्तिष्क में धन–धान्य से परिपूर्ण क्षेत्र की रूपरेखा आ जाती है किसी विद्वान ने अपने अनुभूतिजन्म विचार इस प्रकार व्यक्त किये है– "देश मालवा गहन गंभीर, डग–डग रोटी पग–पग नीर।"[1]

भारत का नाभिप्रदेश मालवा आदिकाल से ही संतों की तपोभूमि रहा है यह अत्यन्त विशाल और विस्तृत फलक पर फैला हुआ है 'मालवा' अत्यन्त समृद्ध रहा है।

'मालव' का उद्भव संस्कृत के 'मा' और 'लव' से हुआ है जिसका अर्थ है – 'लक्ष्मी की विभूति'। प्राचीन ग्रंथों में इस प्रदेश के विभिन्न भागों के लिए अवन्ती, उज्जयिनी, आकर, अवन्ती एवं दशपुर आदि नामों का उल्लेख है।

डॉ. सूर्यनारायण व्यास जी ने अपनी मालवी लोकसाहित्य परिषद की रिपोर्ट में सही उल्लेख किया कि – "मालवगण इस क्षेत्र में बाहर से नहीं आए थे अपितु इस क्षेत्र से भिन्न स्थानों को गये।"[2]

महाराष्ट्र एवं मालवा दोनों ही भारत का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। मालवा व महाराष्ट्र दोनों ही भौगालिक दृष्टि से अत्यन्त संतुलित व सुरक्षित प्रान्त है। यहाँ की प्राकृतिक संपदाएँ भी समृद्ध है। एक ओर जहाँ महाराष्ट्र में कृष्णा, गोदावरी, ताप्ती, पूर्णा, चंद्रभागा, पंचगंगा, वारणा, लोयना आदि नदियाँ बहती है, वहीं मालवा में चम्बल, बेतवा, नर्मदा, क्षिप्रा आदि नदियाँ बहती रहती है। महाराष्ट्र में कई राजाओं ने जैसे – मुस्लिम बादशाह, औरंगजैब, मराठा शासन, वीर शिवाजी, अलाउद्दीन खिलजी, मौर्यवंश, सातवाहन, वाखाटक, कलचुरी आदि ने शासन किया वहीं मालवा पर मुगल, होल्कर, पंवार, सिन्धिया आदि ने शासन किया था। महाराष्ट्र व मालवा में कई ऐतिहासिक मन्दिर है। महाराष्ट्र में (नासिक) प्रसिद्ध ज्योर्तिलिंग त्रयम्बेश्वर, भीमाशंकर, बैजनाथ आदि है। वहीं मालवा (उज्जैन) में महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग स्थित है, जो काफी ऐतिहासिक है। एक ओर जहाँ महाराष्ट्र में नासिक के गोदावरी नदी के तट पर पंचवटी है, यहाँ भगवान राम वनवास के समय आकर ठहरे थे। शिर्डी के सांई बाबा तथा शनि शिंगनापुर जैसे प्रसिद्ध मंदिर हैं वहीं उज्जैन में श्रीकृष्ण जी की विद्या स्थली सांदीपनी आश्रम है जहाँ स्वयं श्रीकृष्ण जी विद्या ग्रहण करने आए थे।

'लोक' शब्द अत्यन्त व्यापक है जिसके अंतर्गत मानव मात्र की न केवल भौतिक सत्ता होती है, बल्कि उसमें उसकी आत्मिक सत्ता का भी साम्राज्य होता है। प्रारंभ के 'लोक' शब्द का अर्थ अनपढ़, असंस्कृत, असभ्य जैसे लोगों से किया जाता था, किन्तु वर्तमान स्थिति में 'लोक' हमारे जीवन का महासमुद्र है।

ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध पुरुष सूक्त में 'लोक' शब्द का व्यवहार 'जीव' तथा 'स्थान' दोनों अर्थों में किया गया है।

> **यथा–** "नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौ : समवर्तत।
> पभ्दयां भूमिर्दिदश : श्रोत्रात्तया लोकां अकल्पयत्।।"[3]

लोक हमारे जीवन के मूल आधार है जो 'लोक साहित्य' को महत्त्वपूर्ण बनाते हैं। सामाजिक व्यवस्था को एक आकार देने का कार्य 'लोक–साहित्य' के द्वारा ही सम्भव होता है किसी अच्छे और बुरे, शुभ या अशुभ की कल्पना अवसर पाकर जब आकार ग्रहण करती है, तब हम पूरी तरह से नैतिक जीवन के प्रति सहिष्णु हो उठते है। यह जनता के हृदय का उद्गार है प्राणियों में व्याप्त जीवन की क्षण–क्षण की अनुभूतियाँ, मनोवेग, हृदयोद्गार तथा क्रिया व्यापार सजीव व साकार होते है और लोककथाएँ इनका सहज और सामान्य सत्यरूप है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक को परिभाषित करते हुए ठीक ही लिखा है – "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है, बल्कि गाँवों और नगरों में फैली हुई वह समूची जनता है, जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है। ये लोक नगर में

परिष्कृत रूचि सम्पन्न और सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की समूची विलासिता को जीवित रखने के लिए आवश्यक वस्तुओं को उत्पन्न करते है।"[4] 'लोक' हमारे राष्ट्र की अमूल्य निधि है। 'लोक', 'लोक' की धात्री सर्वभूत माता पृथ्वी और 'लोक' का व्यक्त रूप मानव। इसी तरह लोक हमारे जीवन के मूल आधार है तो लोक साहित्य सामाजिक आचार–व्यवहार तथा उसकी सोच की व्याख्या और लोकसाहित्य का आधार लोककथाएँ हैं

लोककथाएँ हमारी संस्कृति की संवाहक होती है, उनके अभिप्रायों में संस्कृति के विभिन्न आयाम समाहित होते है। मालवा में लोककथाओं को नाट्य के रूप में प्रदर्शन करने की विशेष शैली है, जिसे 'माच' के नाम से मालवा क्षेत्र में जाना जाता है। इस नाट्य विधा में सभी अभिनय पुरुष वर्ग के द्वारा ही सम्पन्न होता है। उज्जैन, शाजापुर और बड़नगर माच के प्रमुख केन्द्रों में गिने जाते है। महाराष्ट्र व मालवांचल दोनों ही प्रांतों में लोककथाओं के अमूल्य भण्डार भरे पड़े है। यहाँ के भारतीय संस्कृति को अत्यंत भक्ति के साथ जीवन में अपनाऐ हुए है। वे इसकी उपयोगिता व मूल्य को समझते है। यहाँ जितने भी 'पर्व' मनाए जाते है हर्षोल्लास और भक्ति से मनाए जाते है। पर्वो को मनाने में कथाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्ति इन कथाओं के नियम और सिद्धान्तों का पालन भी करता है।

'पर्व' गांठ या जोड़ को कहते हैं। 'पर्व' शब्द का अर्थ होता है – 'भरना'। दो पोरों के बीच में जैसे गन्ने में रस भरा होता है वैसे ही प्रत्येक 'पर्व' रस भरने की प्रक्रिया की शुरूवात भी होता है और अंत भी।

'पर्व' किसी मुख्य तिथि अथवा ज्योतिष के अनुसार ग्रहों आदि के संयोग का भी दूसरा नाम है, जो किसी निर्दिष्ट समय पर आता है। जैसे– 'कुंभ–पर्व' आदि। कुंभ ऐसा पर्व है जिसमें सुनिश्चित ग्रहयोगों के कारण स्थान विशेष पर बारह वर्षों के अंतराल से स्नान, दान आदि की दृष्टि से यह समय आता है। यह स्थान है– हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन व नासिक। अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति, विशेष तिथियाँ, जयंतियाँ, चतुदर्शी, अष्टमी, एकादशी, चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण आदि अनेक पर्व है। 'पर्व' के दिन तीर्थ यात्रा, दान, उपवास, जप, श्राद्ध, भोज, उत्सव, मेला आदि होते है जो जनमानस में उत्साह भरते है।

महाराष्ट्र व मालवांचल में मनाऐ जाने वाले प्रमुख लोकपर्व संबंधी लोककथाएँ इस प्रकार हैं–

मराठी लोकपर्व संबंधी लोककथाएँ – 1. मकर संक्रान्ति लोकपर्व संबंधी लोककथा, 2. नरक–चतुर्दशी (रूपचौदस) लोकपर्व संबंधी लोककथा, 3. शीला–सप्तमी (शीतला सप्तमी) लोकपर्व संबंधी लोककथा, 4. 'श्राद्ध' लोकपर्व संबंधी लोककथा, 5. 'रथ–सप्तमी' लोकपर्व संबंधी लोककथा, 6.चैत्रागण लोकपर्व संबंधी लोककथा, 7. 'चम्पा षष्ठी' लोकपर्व संबंधी लोककथा, 8.'अक्षय–तृतीया' लोकपर्व संबंधी लोककथा, 9. 'त्रिपुरी–पूर्णिमा' (कार्तिक पूर्णिमा) लोकपर्व संबंधी लोककथा, 10. 'कुंभ–लोकपर्व' संबंधी लोककथा, 11. 'अधिकमास' लोकपर्व संबंधी लोककथा।

मालवी लोकपर्व संबंधी लोककथाएँ – 12. 'मकर–संक्राति' लोकपर्व संबंधी लोककथा, 13. नरक–चतुर्दशी (रूप चौदस) लोकपर्व संबंधी लोककथा, 14. 'गंगा–दशहरा' लोकपर्व संबंधी लोककथा, 15. शीतला–सप्तमी लोकपर्व संबंधी लोककथा, 16. 'श्राद' लोकपर्व संबंधी लोककथा, 17. अक्षय–तृतीय लोकपर्व संबंधी लोककथा, 18. तेजा–दशमी लोकपर्व संबंधी लोककथा, 19. कार्तिक–स्नान लोकपर्व संबंधी लोककथा, 20. गोवर्धन–पूजा लोकपर्व संबंधी लोककथा, 21. कुंभ – लोकपर्व संबंधी लोककथा, 22. 'अधिकमास' लोकपर्व संबंधी लोककथा।

महाराष्ट्र हो या मालवांचल सभी पर्वों को हर्षोल्लास से मनाते है। जो यहाँ की सामाजिक सांस्कृतिक चेतना का आध्यात्मिक रूप है यह जन आस्था के प्रतीक बन चुके है।

'मकर संक्रान्ति' लोकपर्व महाराष्ट्र में 14 जनवरी से रथ सप्तमी तक 15 दिन या एक माह तक मनाई जाती है, महाराष्ट्रीयन महिलाएँ इस दिन मन्दिर जाकर खिचड़ी व तिल्ली के लड्डू साथ ही तिल–गुड़ आदि चढ़ाती है। एक सुगडे (मिट्टी का लोटा) में नया अन्न व धान्य भर कर एवं सुहाग सामग्री को सुहागन स्त्री को बाँटती है, हल्दी–कंकू लगाती है एवं उस दिन नए–नए कार्यक्रमों का आयोजन करती है।

मालवांचल में भी पूजन की प्रक्रिया समान है परन्तु यहाँ उस दिन पतंगबाजी व गुल्ली–डंडा खेलने का अधिक प्रचलन है कथा वाचन दोनों ही प्रांतों में नहीं है।

'नरक चतुर्दशी' (रूप चौदस) लोकपर्व के दिन दोनों ही प्रांतों में भगवान यमराज की पूजा–अर्चना की जाती है। इस दिन रूप सौन्दर्य में वृद्धि के लिए श्रीकृष्ण जी की भी पूजा की जाती है। दोनों ही प्रांतों में इससे संबंधित कथा वाचन नहीं किया जाता है।

शीतला सप्तमी (शिला सप्तमी) लोकपर्व महाराष्ट्र में होली के सात दिन पश्चात् मनाया जाता है "इस दिन भोजन नहीं बनाया जाता है, एक दिन पूर्व बनाए गऐ चावल, पूड़ी, हलवा, मीठी पूडियाँ, कढ़ी, भजिऐ इत्यादि का नैवेद्य शीतला माता को लगाया जाता है परन्तु महाराष्ट्र में इस दिन विशेष रूप से जलदेवी की पूजा का महत्त्व है जबकि मालवांचल में केवल शीतला माता की पूजा का विधान है।

महाराष्ट्र में जिस कथा का प्रचलन है उसमें एक आटपाट नगर था। वहाँ के राजा ने राज्य के लिए नया तालाब बनवाया था अब उस तालाब में पानी कैसे आऐगा तो राजा ने जलदेवी से प्रार्थना की। जल देवी प्रसन्न हुई परन्तु वे बोली तेरी बड़ी बहु का लड़का मुझको बली चढ़ा दे तो पानी आएगा। राजा को बहुत चिन्ता हुई फिर राज्य के लिए पानी की भी आवश्यकता थी तो अगले दिन राजा ने रानी को मायके भेज दिया और बेटे को रख लिया बच्चे को नहलाया और पलंग पर रखकर उसको तालाब में रख दिया। जल देवी प्रसन्न हुई तालाब पानी से भर गया। उस दिन शुक्ल पक्ष की 'सप्तमी' थी। बहु ने अपने बेटे की याद आई। अतः वह वापस ससुराल आई रास्ते में वहीं तालाब पड़ा। वह तालाब किनारे गई। वहाँ जलदेवी की पूजा अर्चना की, ककड़ी और दही–चावल की नैवेद्य दिखाया और प्रार्थना की हमारे वंश में कोई पानी में डूब गये हो तो वो हमें प्राप्त हो। बस प्राथर्ना के बाद बहु को लगा कि उसका पैर कोई खींच रहा है देखा तो उसी का लड़का था। वह ससुराल आई साथ में पुत्र को देखकर राजा को आश्चर्य हुआ। राजा ने पूछा तो बहु बोली शीला सप्तमी की पूजा की थी उसी समय यह बाहर गया राजा को अत्यन्त आनंद हुआ। तभी से आज तक महाराष्ट्र में 'शीला सप्तमी' के पूजन के साथ जलदेवी की पूजा का विशेष महत्व है परन्तु मालवांचल में इस पर्व से संबंधित कथा में अंतर है यहाँ जो कथा प्रचलन में है उसके अनुसार सील और पील दो बहनें थी। शीतला सप्तमी का दिन था वो भीख माँगने राजा के यहाँ गई तो राजा के यहाँ से गरम–गरम दाल उनके हाथ पर रख दी तो दोनों बहनों के हाथ में छाले पड़ गए पूरे गाँव में लोगों ने गरम–गरम ही दिया। एक बूढ़ियाँ का ही घर ऐसा था जिस घर में उनको ठंडा भोजन मिला इससे उनको बहुत ठंडक मिली। तब दोनों बहनों ने बूढ़ियाँ को आशीर्वाद दिया और कहा कि थोड़े दिनों बाद गाँव में आग लगने वाली है तुम कुम्हार से करवा लाना पानी भर कर घर के आसपास पानी की

डोर बाँधना। उसने ऐसा ही किया जब आग लगी तो बूढ़िया के घर पर आँच भी नहीं आई। सब आश्चर्यचकित हुये। सबने राजा से शिकायत की राजा ने बूढ़ियाँ को बुलाया तो बूढ़ियाँ ने सारा वृत्तांत कह सुनाया। राजा ने दोनों बहनों से माफी माँगी तो वे झट माता बन गई तभी से आज तक सभी शिला सप्तमी या शीतला सप्तमी का पर्व मनाते है। अतः दोनों ही प्रांतों में पूजन विधान के साथ लोकपर्व संबंधी कथा में भी असमानताएँ हैं, दोनों प्रांतों में एक ही दिन अलग–अलग देवियों का पूजन किया जाता है। परन्तु यह पूजन दोनों ही प्रान्तों में अपने बच्चों की रक्षा हेतु किया जाता है।

श्राद्ध लोकपर्व' – 'श्राद्ध' लोकपर्व के दिन महाराष्ट्र व मालवांचल में पितृ पक्ष के निमित्त पितरों का श्राद्ध व तर्पण किया जाता है। सोलह दिन तक प्रतिदिन पितरों को भोजन का भोग लगाया जाता है। यह दोनों ही प्रांतों में समानता है। महाराष्ट्र में इस दिन से एक माह तक गुलाबाई व गुलोजी का पूजन कुँवारी कन्याओं द्वारा किया जाता है। इस पूजन में कन्याएँ गुलाबाई के गीत गाती है, आरती उतारती है इसी प्रकार मालवांचल में भी संजाबाई व शंकर जी की पूजा अर्चना कुंवारी कन्याओं द्वारा किया जाता है तथा यहाँ पर कन्याएँ संजाबाई के गीत गाती है एवं उनकी आरती उतारती है। अतः दोनों ही प्रांतों में इस पर्व को मनाने की समानता है। मालवांचल में इस पर्व से संबंधित कथा है, परन्तु उसका वाचन नहीं किया जाता है। महाराष्ट्र में पर्व विशेष से संबंधित कथा नहीं है। परन्तु इस पर्व का समापन शरद पूर्णिमा को किया जाता है। इस पर्व से संबंधित लोकगीत बहुत ही मधुर लगते है।
मालवांचल में जो कथा श्राद्ध पर्व से संबंधित है उसमें एक साहूकार का एक बेटा व बेटी थी। बेटे का नाम छोदों और बेटी का नाम छोदी था। उनके माँ–बाप का श्राद्ध आया तो बेटा बोला में गया जी श्राद्ध करने जाऊँगा और तु मेरी बहन को 16 दिन तक रोज बुलाकर खाना खिलाना औरत ने हाँ कहा इधर भाई गया जो गया उधर औरत नंनद को रोज सारा घर का काम करवाती और रोटी दे देती अब श्राद्ध का दिन आया उस दिन नंनद को खाने का न्यौता देने गई और कहा कि बाई जी आप सबको जीमने आना है पर पेड़ हिले तो आना, पत्ता हिले तो मत आना। सब लोक रास्ता देखकर सो गए पेड़ हिले ही नही। माँ–बाप के श्राद्ध के दिन आँसू गिरे जो गया जी श्राद्ध कर रहे थे सुन ब्राह्मण ने कहा तुम्हारे यहाँ जरूर बहन–बेटी रो रही है। ये खून के आँसू यहाँ गिरे है। बेटा घर आता है औरत से कहता है तुमने जरूर मेरी बहन को रूलाया होगा। वह बोली में रोज बहन को खाना खाने बुलाती थी फिर वह बहन के यहाँ जाता है बहन सारा वृत्तांत भाई को बताती है। उसे क्रोध आता है घर आकर पत्नी से कहता है तु खाने का सामान बाँध ले तेरे पीहर में आग लग गयी इतना सुनते ही बहन जल्दी से तैयार हो जाती है और उधर पीहर भी खबर भिजवाता है कि आपकी बेटी आ रही है उसकी तबीयत ठीक नहीं है। ब्राह्मण ने कहा है कि उसको यदि पीहर वाले मुँह काला करके गधे पर बैठकर आए तो वह ठीक होगी। पीहर के लोग ऐसा ही करते है। सब गधे पर बैठकर आते है तो वह समझ जाती है मेरे पति ने ही सब कुछ किया है, फिर वह माँफी माँगती है। इसीलिए कहते है बहन बेटी का मन नहीं दुखाना चाहिए।

रथ सप्तमी लोकपर्व – रथ सप्तमी लोकपर्व पर महाराष्ट्र में सूर्य देवता व उनके रथों का पूजन किया जाता है एवं उन्हें दूध का नैवेद्य लगाया जाता है। इसी तरह मालवांचल में भी सूर्य देवता व उनके रथों का पूजन किया जाता हैं। अतः दोनों प्रांतों में इस लोकपर्व को मनाने में समानता है। परन्तु दोनों ही प्रांतों में इस लोकपर्व पर कथा वाचन नहीं किया जाता है।
'चैंत्रागण' या 'चिंत्रागण' लोकपर्व के दिन महाराष्ट्र में सुन्दर–सुन्दर चटकदार रंगों व फुलों से सजाकर रांगोली बनाई जाती है इस दिन इसी रंगोली को चैत्र गौर मानकर उनका पूजन किया जाता है। इसलिए महाराष्ट्र में रांगोली को उलांगते नहीं है। इस दिन हल्दी–कंकू का कार्यक्रम का भी आयोजन किया जाता है।
इसी तरह मालवांचल में भी मांडने, थाँपे, रंगोली व चित्रकला का विशेष महत्व है। प्रत्येक पर्व, त्योहार या उत्सव हो हमें इनकी झलक देखने को मिलती रहती है। अतः दोनों ही प्रांतों में इसे मनाने की समानता है।
चैत्रागण पर्व मनाने का उद्देश्य यही है कि, चित्रकला की उपासना हो इस लोकपर्व से संबंधित कोई भी कथा नही है, इसलिए महाराष्ट्र व मालवांचल में कथा का वाचन नहीं किया जाता है, परन्तु दोनों ही प्रांतों में इसे मनाने का उद्देश्य एक ही है।

'चम्पा षष्ठी' लोकपर्व के दिन महाराष्ट्र में गुप्त नवरात्रि के समाप्ति का दिवस होता है, इस दिन 'प्याज, प्याज के पत्ते' व 'बैंगन के भरते' का नैवेद्य भगवान खण्डोबा को लगाया जाता है, परन्तु मालवांचल में इस प्रकार का कोई लोकपर्व नहीं मनाया जाता है ना ही किसी कथा का वाचन किया जाता है।

'गोवर्धन पूजन' महाराष्ट्र में नहीं मनाया जाता है। महाराष्ट्र में कृषि से संबंधित पोला त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इसका प्रचलन मालवांचल में बहुत अधिक हैं, क्योंकि मालवांचल कृषि प्रधान देश माना जाता है और यहाँ का जन समूह इसी पर निर्भर है। माना जाता है कि प्राचीन काल में भगवान श्रीकृष्ण ने इन्द्रदेव के द्वारा अति वर्षा से रक्षा करके जनसामान्य व कृषि उपज की रक्षा की थी और गोवर्धन पर्वत को स्वयं अपनी छोटी सी उंगली पर धारण कर लिया था उसी दिन से गोवर्धन पूजा की जाती है, इस दिन विशेषकर गायों की भी पूजा की जाती है। मिट्टी के गोवर्धन बनाकर उनकी पूजा कर नया धान्य भगवान को चढ़ाया जाता है।

'गंगा दशहरा' लोकपर्व महाराष्ट्र प्रान्त में नहीं मनाया जाता है परन्तु मालवांचल में इस पर्व का बहुत महत्व है। गंगा दशहरे के दिन मालवांचलवासी पवित्र नदी में स्नानार्थ अवश्य जाते है, इस दिन स्नान करने से दस पापों से मुक्ति मिलती है। परन्तु प्रचलित कथा का गायन या श्रवण इस दिन नहीं किया जाता।

'अक्षय तृतीया' लोकपर्व के दिन महाराष्ट्र व मालवांचल में अपने पितरों को तृप्त करने के लिए नए मटके में पानी भरकर उसके ऊपर खरबूजा रखकर उसका दान किया जाता है। परन्तु महाराष्ट्र में इस पर्व से संबंधित कोई कथा का वाचन नहीं किया जाता है। मालवांचल में एक बनिये की कथा के द्वारा इस पर्व के दिन दान–धर्म करने का महत्त्व बताया गया है। अतः दोनों प्रान्तों में इस पर्व को मनाने में समानता है।

'तेजा दशमी' लोकपर्व के दिन मालवांचल में भगवान तेजाजी व नागदेवता का पूजन अर्चन किया जाता है। परन्तु महाराष्ट्र में यह लोकपर्व नहीं मनाया जाता है। मालवांचल में तेजा दशमी संबंधित जो कथा है उसमें तेजाजी अपनी पत्नी का गोना करने ससुराल जा रहे थे कि रास्ते में गुर्जरों की गायें चोरी हो गई। गुर्जरों ने तेजाजी को बुलाया और कहा हमारी गायें आप छुड़वाकर लाओं, तेजाजी संघर्ष करके गायों को ले आए परन्तु बहुत घायल हो गए थे तो वही गिर गए वहाँ एक सर्प बैठा था उसने कहाँ मैं तुझको डसूँगा,

तो तेजाजी बोले पहले मैं पत्नी को ले आऊँ फिर डँसना फिर वे गोना कराकर सर्प महाराज के पास पहुँचे कहा अब आप मुझे डँस लो। नाग महाराज कहते है तेरा तो पूरा शरीर छिदा हुआ है मैं कहाँ डँसूगा तो तेजाजी महाराज बोले मेरी जीभ पर डँस लो नाग महाराज ने ऐसा ही किया और कहा कि जब तक मैं पृथ्वी पर हूँ तक तक तेरा भी नाम अमर रहेगा, मैं जिसे भी डँसूगा उसे तेरे नाम की ताँती यदि बाँध दी जाएगी तो वह पूरी तरह से अच्छा हो जाएगा। फिर तेजाजी महाराज की मृत्यु हो जाती है परन्तु वे आज भी अमर है। मालवांचल में तेजा दशमी का पर्व हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस दिन लोग घरों में रंग–बिरंगी पन्नियों से सुसज्जित छतरियाँ चढ़ाकर विधि–विधान से इनका पूजन करते है।

'कार्तिक पूर्णिमा' के दिन महाराष्ट्र व मालवांचल दोनों ही प्रान्तों में एक माह तक पवित्र नदियों में स्नान करने के लिए जाते है, कार्तिक माह में नदियों में दीपदान का बहुत महत्त्व है। परन्तु महाराष्ट्र में इस पर्व से संबंधित कथा प्राप्त नहीं हुई है। मालवांचल में एक कथा के माध्यम से कार्तिक स्नान के द्वारा प्राप्त पुण्य लाभ के बारे में बताया गया है। जिसके अनुसार एक साँस रोज कार्तिक स्नान करने जाती है परन्तु बहु को नहीं ले जाती थी कहती तु गंगा, नर्मदा, सरस्वती कहकर घर में ही स्नान करले, बहु मान गई। इस तरह दोनों नियम से पूजा–पाठ करती। एक दिन साँस नदी पर कान की झुमकी, हार, करदोना भूल गई। इधर बहू घर में स्नान करती तो एक–एक वस्तु उसके हाथ में आ जाती। फिर वह गहने अपने पास रख लेती है। साँस घबराती आई बहु मेरे गहने गंगा में बह गए है बहु बोली मेरे साथ ऐसा हुआ सासुजी तो साँस बहु के पैर छूकर कहती है तेरा कार्तिक स्नान सार्थक रहा है। अतः दोनों ही प्रान्तों में इस लोकपर्व को मनाने में समानता है।

'कुंभ पर्व' समूचे भारत में हिन्दुओं का एक अति प्रसिद्ध पर्व है। बारह वर्षों के भीतर यह हमारे देश के चार स्थानों में से एक–एक स्थान पर आता है। यह चारों स्थान हैं – प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन। महाराष्ट्र में नासिक के गोदावरी नदी के किनारे प्रत्येक 12 वर्ष के अंतराल से कुंभ का मेला लगता है। जहाँ दूर–दूर से लोग स्नान करने आते है। पौराणिक कथा के अनुसार देवताओं व दानवों ने मिलकर क्षीरसागर का मंथन किया फलस्वरूप उसमें से अमृत कुंभ प्राप्त हुआ देवता नहीं चाहते थे कि दानव अमृत पीकर अमरता प्राप्त करें। अतः वे चालाकी से कुम्भ को इन्द्र देव के पुत्र जयंत को सौंप देते हैं, जिसे छिपाने के लिए वह पृथ्वी और स्वर्ग पर भागता रहा। छीना–झपटी में कुम्भ में से कुछ बूँदें जहाँ–जहाँ गिरी उन स्थानों पर कुंभ मेलों का आयोजन किया जाता है। यहाँ त्र्यंबकेश्वर ज्योर्तिलिंग भी स्थित है। अतः नासिक जाने वाले प्रत्येक जन गोदावरी में स्नान करके ज्योर्तिलिंग के दर्शन जरूर करते है। नासिक में सप्तश्रृंगी देवी का काफी प्राचीन मंदिर भी है जो कि 51 शक्तिपीठों में से एक है। सप्तश्रृंगी देवी के तीन रूप है सुबह वे बाल रूप में, दोपहर में युवावस्था व संध्याकाल में वृद्धावस्था में दिखती है। देवी का एक हाथ उनके कान पर लगा है, जिससे वे भक्तों की प्रार्थना सुनती है।

इसी प्रकार से मालवांचल में भी 'कुंभ पर्व' भाव–भक्ति से मनाया जाता है। उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे भी 'कुंभ पर्व' का आयोजन प्रत्येक 12 वर्ष में होता है। यहाँ आने वाला प्रत्येक व्यक्ति महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग के दर्शन अवश्य करेगा। साथ ही नासिक में जिस तरह सप्तश्रृंगी देवी का मंदिर शक्तिपीठ में से एक है, उसी प्रकार उज्जैन में हरसिद्धि देवी का मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है। नवरात्रि में यहाँ दीपमालाएँ लगाई जाती है जो अलौकिक व आकर्षित करती है। सप्तश्रृंगी देवी के गढ़ के निकट ही यहाँ आठ कुण्ड है। यहाँ पर शिवालय नाम का पवित्र कुण्ड है। उसी प्रकार से उज्जैन में भी 52 कुण्ड है जहाँ स्नान करने दूर–दूर से लोग आते है।

अतः महाराष्ट्र व मालवांचल दोनों ही प्रांतों में कुंभ मेले का आयोजन होता है। नासिक में प्रसिद्ध ज्योर्तिलिंग त्र्यंबकेश्वर व उज्जैन में प्रसिद्ध ज्योर्तिलिंग महाकालेश्वर भारत के बारह ज्योर्तिलिंग में से एक है।

अधिकमास को पुरुषोत्म मास भी कहा जाता है। महाराष्ट्र व मालवांचल के लोग इस दिन भगवान विष्णु का पूजन करते है साथ ही दान–पुण्य का अधिक महत्त्व है। दोनों ही प्रान्तों में पूजन विधान व कथा भी समान है। महाराष्ट्र व मालवांचल में प्रत्येक लोकपर्व को उत्साह से मनाते है एवं विभिन्न पर्वों से संबंधित कथा का वाचन अवश्य किया जाता है। कथाओं के कथ्य धार्मिक आधार एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य में ही होते हैं, धार्मिकता से परिपूर्ण होने के कारण इसमें श्रद्धा एवं आस्था होती है तथा तर्क एवं बुद्धि का प्राबल्य नहीं पाया जा सकता।

अतः हम कह सकते है कि चाहे महाराष्ट्र हो या मालवा यहाँ के वासी भारतीय संस्कृति को अत्यन्त भक्ति के साथ अपने जीवन में अपनाए हुए है। पर्वों को मनाने में कथाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

सन्दर्भ

1. पद्मभूषण सूर्यनारायण व्यास – मालवा जनपद और उसका क्षेत्रफल विस्तार, पृ. 6
2. डॉ. श्याम परमार – मालवी लोकसाहित्य एक अध्ययन, पृ. 64
3. ऋग्वेद – 10/09/24
4. जनपद, वर्ष–1 अंक–1 पृ. 65